Bq – यीशु ने पानी को शराब/द्रस्क्षा रस में बदल ददया
युहोन्ना २:१-११ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु ने पानी को शराब में बदल दिया

युहोन्ना २:१-११

खोदाई: यदि येशुआ ने अभी तक कोई चमत्कार नहीं किया होता, तो मैरी उसके पास क्यों आती? पद 3-5 से आप यीशु और उसकी माँ के बारे में क्या सीखते हैं? सामाजिक रीति-रिवाजों के महत्व को देखते हुए, मेजबान के रूप में आप कैसा महसूस करेंगे (श्लोक 3)? एक सेवक के रूप में (श्लोक ६-८)? श्लोक 9-10 में गुरु के रूप में? दूल्हे के रूप में? इस कहानी में जार के कार्य और आकार की क्या भूमिका है? शराब की मात्रा और गुणवत्ता येशुआ की महिमा को कैसे प्रदर्शित करती है?

प्रतिबिंब: क्या आपने कभी ईश्वर को चमत्कारी तरीके से प्रदान करते देखा है? कैसे? हमें परमेश्वर के प्रावधानों को स्वीकार करने से कौन रोकता है? यदि यह चमत्कार नहीं है, तो क्या यह अभी भी ईश्वर की ओर से आता है? कुछ तरीकों की सूची बनाएं जिनसे भगवान ने आपकी ज़रूरतें पूरी कीं। अतीत में ईश्वर के प्रावधान को याद करने से आपको अपनी वर्तमान जरूरतों के लिए उस पर भरोसा करने के लिए कैसे प्रोत्साहन मिलता है? कौन सी साधारण खुशियाँ आपको खुशी या तृप्ति का एहसास दिलाती हैं? कभी-कभी कौन सी चीज़ आपको जीवन का आनंद लेने से रोकती है? आपको क्या लगता है कि जब आप जीवन का आनंद लेने के लिए समय नहीं निकालते हैं तो आपका गवाह कैसे प्रभावित होता है?

समय के ब्योरे के बारे में युहोन्ना जितना सावधान कोई नहीं है। इन छंदों से शुरू करके और युहोन्ना २:११ तक जाते हुए वह हमें कदम दर कदम, यीशु के सार्वजनिक जीवन के पहले महत्वपूर्ण सप्ताह की कहानी बताते हैं। पहले दिन की घटनाएँ यूहन्ना १:१९-२८ में हैं; दूसरे दिन की कहानी यूहन्ना १:२९-३४ है; तीसरा दिन युहोन्ना 1:35-39 में सामने आया है। योचनान १:४०-४२ के तीन श्लोक चौथे दिन की कहानी बताते हैं; पाँचवें दिन की घटनाएँ यूहन्ना १:४३-५१ में बताई गई हैं। छठा दिन किसी कारण से दर्ज नहीं किया गया है। और सप्ताह के सातवें दिन की घटनाएँ यूहन्ना २:१-११. में बताई गई हैं

यीशु चमत्कार दिखाने या अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए शादी में नहीं आया था। उनका सार्वजनिक मंत्रालय यरूशलेम में मंदिर की पहली सफाई के साथ शुरू होगा (युहोन्ना २:१३-२२), जहां कोई चमत्कार नहीं देखा जाएगा। परन्तु यहां तीसरे दिन गलील के काना में एक विवाह हुआ। विवाह तीसरे दिन हुआ क्योंकि यहूदा से गलील तक, जहां काना नगर स्थित था, तीन दिन की यात्रा थी। प्रभु अपने पालन-पोषण के क्षेत्र में लौट आये थे। काना नाज़रेथ से लगभग चार मील दूर था, और यह संभवतः परिवार के

Bq – यीशु ने पानी को शराब/द्रस्क्षा रस में बदल ददया
युहोन्ना २:१-११ | 2

किसी करीबी सदस्य की शादी थी। यह दावत में मरियम की सक्रिय भूमिका को समझाएगा (यूहन्ना २:१)। जोसेफ का कोई उल्लेख नहीं है क्योंकि संभवतः उस समय तक उनकी मृत्यु हो चुकी थी। अधिक संभावना यह है कि मरियम येशुआ के सौतेले भाइयों में से एक के साथ रहती थी।

सातवां दिन: यह दृश्य एक गाँव की शादी की दावत है (यहूदी शादी की दावत के विवरण के लिए Al देखे – यीशु के जन्म की मरियम मैरी को भविष्यवाणी की गई थी)। यीशु और उसके पांच प्रेरितों को भी शादी में आमंत्रित किया गया था (यूहन्ना २:२)। उस समय की यहूदी विवाह प्रणाली में, शादी के बाद (लोगों के एक बड़े समूह के साथ) (थोड़ी संख्या में लोगों के साथ) शादी की दावत होती थी, जो सात दिनों तक चलती थी। यहूदी दावत के लिए शराब/द्राक्षा रस आवश्यक थी। रब्बियों ने कहा कि शराब के बिना कोई आनंद नहीं है। वे आम तौर पर सबसे पहले सबसे अच्छी शराब परोसते थे और जब लोग नशे में धुत हो जाते थे और अंतर नहीं बता पाते थे, तो वे सस्ती शराब बाहर ले आते थे। लेकिन एक यहूदी शादी में सबसे बुरी चीज़ जो हो सकती थी वह थी शराब ख़त्म हो जाना
– ऐसे महत्वपूर्ण आयोजन में एक सामाजिक आपदा। लेकिन दावत सात दिन तक चलती थी और कभी-कभी ऐसा होता था।

मसीह की संपूर्ण सांसारिक सेवकाई के दौरान, मरियम केवल तीन दृश्यों में दिखाई दी। इनमें से दो अवसरों पर, यीशु ने स्वयं इस धारणा को स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर दिया कि उसकी माँ के रूप में उस पर उसका सांसारिक अधिकार उसे उसके सेबकाई के किसी भी पहलू का प्रबंधन करने का अधिकार देता है। बेशक, उसने उसका अनादर किए बिना ऐसा किया, लेकिन फिर भी उसने स्पष्ट रूप से और पूरी तरह से इस विचार को खारिज कर दिया कि मरियम किसी भी तरह से उसकी कृपा की मध्यस्थ थी।

प्रारंभिक चर्च को मरियम के पंथ के बारे में कुछ भी नहीं पता था जैसा कि आज प्रचलित है। मरियम के बारे में किंवदंती का पहला उल्लेख दूसरी शताब्दी के अंत में, जेम्स के तथाकथित प्रोटो-इवेंजेलियम में पाया जाता है, और उसके जन्म के बारे में एक शानदार कहानी प्रस्तुत करता है। इसमें यह भी कहा गया है कि वह जीवन भर कुंवारी रहीं। लेकिन टर्टुलियन, जो प्राचीन चर्च के सबसे महान अधिकारियों में से एक थे, और जिनकी मृत्यु २२२ ईस्वी में हुई थी, ने मरियम के कथित चमत्कारी जन्म से संबंधित किंवदंती के खिलाफ अपनी आवाज उठाई। उन्होंने यह भी माना कि येशुआ के जन्म के बाद, मरियम और योसेफ एक सामान्य विवाह संबंध में रहते थे। इस प्रकार, चर्च ने मरियम के नाम की पूजा किए बिना कम से कम १५० वर्षों तक कार्य किया। मरियम, मृत संतों और स्वर्गदूतों के लिए प्रार्थनाएँ लगभग ६०० ईस्वी में सामने आईं। एवे मारिया की शुरुआत १५०८ में हुई थी, और पवित्रशास्त्र में ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं है कि किसी ने कभी भी मोक्ष के लिए मरियम को बुलाया हो।

दूल्हे के परिवार से अपेक्षा की गई थी कि वे सभी के लिए पर्याप्त भोजन और पेय उपलब्ध कराएंगे। दुर्भाग्य से, उन्होंने बहुत अच्छी योजना नहीं बनाई थी। जब

Bq – यीशु ने पानी को शराब/द्रस्क्षा रस में बदल ददया
युहोन्ना २:१-११ | 3

दाखरस ख़त्म हो गया, तो यीशु की माँ ने उससे कहा, “उनके पास अब दाखमधु नहीं रहा” (यूहन्ना २:३)। आज तक पूर्व में, आतिथ्य को एक पवित्र कर्तव्य माना जाता है और, कुछ दुर्लभ मामलों में, अगर इसे रोका जाता है तो कानूनी कार्रवाई का कारण बनता है। शादी का मेजबान निस्संदेह परिवार का एक सदस्य था जिसकी मरियम बहुत परवाह करती थी। यह तरह वह कह रहा था, “इसके बारे में कुछ करो।” सीधे तौर पर कहे बिना, वह शायद एक चमत्कार की मांग कर रही थी, भले ही यीशु ने अभी तक कोई चमत्कार नहीं किया था।

विश्वासियों के लिए पीने का मुद्दा आज हमारे लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। बाइबल स्पष्ट रूप से नशे की निंदा करती है: शराब के नशे में मत डूबो, जो व्यभिचार की ओर ले जाता है (या दूसरों को यौन रूप से गलत रास्ते पर ले जाता है)। इसके बजाय, आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ (इफिसियों ५:१८)। शराब के अनुचित उपयोग के बारे में परमेश्वर का निर्णय नादाब और अबीहू पर उसके निर्णय में प्रतिबिंबित होता प्रतीत होता है (लैव्यव्यवस्था १०:१-७)। इस घटना के बाद यहोवा ने हारून को यह निर्देश दिया: जब भी तुम मिलापवाले तम्बू में जाओ, तो तुम और तुम्हारे पुत्र दाखमधु या अन्य किण्वित पेय न पियें, अन्यथा तुम मर जाओगे। यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी अध्यादेश है, ताकि आप पवित्र और सामान्य के बीच, अशुद्ध और शुद्ध के बीच अंतर कर सकें (लैव्यव्यवस्था १०:९-१०)। धर्मग्रंथ मादक पेय पदार्थों के दुरुपयोग के विरुद्ध भी चेतावनी देते हैं (नीतिवचन २३:२९-३५)। नीतिवचन २०:१ कहता है: दाखमधु ठट्ठा करनेवाला और बियर झगड़ा करानेवाला है; जो कोई उनके द्वारा पथभ्रष्ट हो जाता है वह बुद्धिमान नहीं है। ऐसी चेतावनियों को ध्यान में रखते हुए रब्बी शाऊल का कहना है कि बुजुर्गों या उपयाजकों को शराब का आदी नहीं होना चाहिए (प्रथम तीमुथियुस ३:३ और ८)।

इन चेतावनियों के बावजूद, बाइबल मानती है कि शराब अपने लोगों के लिए यहोवा के उपहारों में से एक है (व्यवस्थाविवरण ७:१३; सभ ९:७-१०; आमोस ९:१३-१४; योएल ३:१८)। यहोवा मवेशियों के लिए घास उगाता है, और लोगों के लिए पौधे उगाता है – पृथ्वी से भोजन लाता है: शराब जो मनुष्यों के दिलों को खुश करती है, तेल जो उनके चेहरे को चमकाता है, और रोटी जो उनके दिलों को सहारा देती है (भजन १०४:१४-१५)). यह परिप्रेक्ष्य कुलुस्सियों २:२०-२३ और 1 तीमुथियुस ४:१-५ में रब्बी शाऊल के शब्दों से परिलक्षित होता है जहाँ वह तपस्या की निंदा करता है।

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि मसीहा के दिनों में शराब को पानी से पतला किया जाता था। अनुपात अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग होगा, लेकिन आम तौर पर यह एक भाग वाइन और तीन भाग पानी होता है। केवल बर्बर लोग ही बिना मिश्रित शराब पीते थे। यह अंगूर का रस नहीं था. यह अभी भी शराब थी, लेकिन यह पतला था। बिल्कुल स्पष्ट रूप से, आज दुकानों में खरीदी गई शराब अमिश्रित है। इसकी अल्कोहलिक मात्रा पहली शताब्दी की वाइन की तुलना में काफी अधिक है। और लत और शराब से होने वाली मौतों की कीमत अनगिनत है, परिवारों और विवाहों को होने वाले नुकसान की तो बात ही छोड़ दें। किशोरों में

Bq – यीशु ने पानी को शराब/द्रस्क्षा रस में बदल ददया
युहोन्ना २:१-११ | 4

शराब पीना बड़े पैमाने पर हो गया है।

प्रत्येक आस्तिक को यह निर्णय लेना चाहिए कि उसे मादक पेय पदार्थों का उपयोग करना है या उससे बचना है। संपूर्ण शराबबंदी के लिए कोई प्रमाणिक पाठ नहीं है, न ही सामाजिक मद्यपान की वकालत करने वाला कोई पाठ है। किसी को अपने विवेक और वचन के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित होना चाहिए। यह एक ऐसा मुद्दा है जहां विवेक भिन्न हो सकते हैं (रोमियों १४१:१-५) और मौजूदा स्थिति के आधार पर, शास्त्रीय सिद्धांतों का अनुप्रयोग भिन्न हो सकता है। घर पर एक गिलास वाइन पीना बाहर जाकर किसी ऐसे व्यक्ति के साथ बीयर पीने से काफी अलग है जिसे आप जानते हैं कि वह शराबी है।

इस मामले पर निर्णय लेते समय प्रेम-सीमित स्वतंत्रता के सिद्धांत को ध्यान में रखा जाना चाहिए। शराब का उपयोग स्वतंत्रता का एक क्षेत्र है – फिर भी रब्बी शाऊल का सुझाव है कि इस स्वतंत्रता का प्रयोग हमेशा प्रेम और आत्म-संयम के साथ किया जाना चाहिए (प्रथम कुरिन्थियों ८:९-१३)। वह आज भी हमें विशेष रूप से घोषित करता है: मांस न खाना या शराब पीना या ऐसा कुछ भी नहीं करना बेहतर है जिससे आपके भाई या बहन का पतन हो (रोमियों १४:२१)।

लेकिन वापस काना में शादी की दावत पर। . . प्रभु और उनकी माँ के बीच कुछ सबसे महत्वपूर्ण आदान-प्रदान लगभग अज्ञात हैं। लेकिन एक माँ, जिसके एंटीना उसके बच्चे के साथ पूरी तरह से जुड़े हुए हैं, उन संकेतों को पकड़ लेती है जिन पर दूसरों का ध्यान नहीं जाता है। यीशु के पास बातें कहने का एक तरीका था जो मरियम को पसंद आया। वह कभी भी क्षुद्र, लापरवाह या असभ्य नहीं था। इसके विपरीत, हर बातचीत में, येशुआ अपनी टिप्पणियों में हमेशा विचारशील और जानबूझकर रहता था। उनकी माँ से कहे गए शब्द उनके लिए एक पवित्र एजेंडे के रूप में काम करते थे। जिस सड़क पर उसने यात्रा की वह पथरीली और खड़ी थी। उसका गंतव्य – क्रूस – उस महिला को पूरी तरह से नष्ट करने की धमकी देता था जो धन्य माँ थी। अपनी माँ के बारे में मसीहा के बयान उसे अपरिहार्य शर्म और नुकसान से बचाने और उसे एक ऐसी पहचान देने के लिए डिज़ाइन किए गए थे जो अटल हो। और इसलिए उसने अप्रत्याशित बात कही, चौंका दिया और उसे चौंका दिया। मरियम ने सुना, और जो कुछ उसने कहा उस पर विचार किया।

महिला, मुझे इसकी चिंता क्यों होनी चाहिए? आप या? यीशु ने उत्तर दिया (यूहन्ना २:४a)। येशुआ के दिनों में, उनकी माँ को महिला के रूप में संबोधित करना आज की तरह न तो असभ्य था और न ही अनुचित। बाद में, उन्होंने क्रूस पर से मरियम को उसी प्रकार स्नेहपूर्वक संबोधित किया (युहोन्ना १९:२६)। पहली सदी की गलील संस्कृति में, यह किसी महिला को “मैडम” या “मैम” कहकर संबोधित करने जैसा था। यह सम्मान या स्नेह का शब्द था। फिर भी हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि यह सबसे असामान्य था जब एक बेटे ने अपनी माँ को इस तरह से संबोधित किया।

Bq – यीशु ने पानी को शराब/द्रस्क्षा रस में बदल ददया
युहोन्ना २:१-११ | 5

हालाँकि, साधारण तथ्य यह है कि उसने उसे “माँ” के रूप में संबोधित नहीं किया – जिसे कोई भी माँ नोटिस करेगी – ने मरियम को एक मजबूत संकेत भेजा कि यीशु के साथ उसकी माँ के रूप में उसका रिश्ता बदल रहा था। इसका मतलब यह नहीं है कि उसके शब्दों ने मरियम के दिल को नहीं छुआ। घोषित करने के लिए, संक्षेप में, “मुझे तुमसे कोई लेना-देना नहीं है”, या ”तुममें और मुझमें क्या समानता है,” ने उसे बहुत आहत किया होगा। आख़िरकार, उसने उसे जन्म दिया था। येशुआ दूसरों से इस तरह बात कर सकता है, लेकिन वह अपनी माँ से ऐसी बात कैसे कह सकता है? यहां तक कि जब वह बारह वर्ष का था और उसने यरूशलेम के मंदिर में अपना अलगाव शुरू किया था (लूका २:४१-५०), तब से भी अधिक, यहां वह उससे और अधिक अलग होने का संकेत दे रहा था। वह मरियम के साथ अपने रिश्ते में सीमाओं को परिभाषित कर रहा था क्योंकि वह अपना सार्वजनिक मंत्रालय शुरू करने की तैयारी कर रहा था। वह अब अपनी मां के निर्देशों का पालन नहीं कर रहा था, बल्कि अपने पिता का काम कर रहा था। अधिक शिक्षण आवश्यक होगा (Ey देखें – यीशु की मां और भाई), लेकिन आखिरी बार जब हम मिरियम को बाइबिल में देखते हैं, तो हम उसे वहीं देखते हैं जहां वह संबंधित है – जॉन के साथ, पुनर्जीवित मसीहा के अन्य शिष्य और शिष्य, जो आने वाले पबित्र आत्मा की प्रतीक्षा कर रहे हैं (प्रेरितों के काम १:१४)।

यदि यीशु ने अपनी माँ के सुझाव और नेतृत्व को स्वीकार कर लिया होता, तो “मरियम पूजा” और रोमन कैथोलिक चर्च के इस दावे के लिए कुछ आधार हो सकते थे कि “मैरी सभी की आशा है।” लेकिन यहां, उनके सेबकाई की शुरुआत में ही, ऐसे किसी भी दावे से पर्दा उठ जाता है।

मेरा समय अभी नहीं आया है. क्योंकि उनका सार्वजनिक मंत्रालय अभी तक शुरू नहीं हुआ था, उन्होंने मरियम से कहा कि मसीहा के रूप में प्रकट होने का उनका समय अभी तक नहीं आया है (युहोन्ना २:४b, ७:३०, ८:२०, १२:२३, १२:२७, १६:३२ , १७:१). उनका सार्वजनिक सेबकाई गलील में शुरू नहीं हो सका। इसे डेविड शहर में शुरू करने की आवश्यकता थी। चमत्कार जो उसके मेशियाच होने के दावे को प्रमाणित करेंगे, उन्हें वहीं से शुरू करने की आवश्यकता है। वह परमेश्वर की समय सारिणी पर था, उसकी नहीं। एक आदमी के रूप में, वह उसका बेटा था। लेकिन परमेश्वर के रूप में, वह उसका भगवान था। आध्यात्मिक मामलों में उसे आदेश देना उसका काम नहीं था। जिस तरह से उसने उससे बात की उसने उसे कोई वास्तविक अनादर दिखाए बिना ही उस तथ्य की याद दिला दी। फिर उसने पानी को शराब में बदल दिया।

उसके बाद मरियम हमेशा नेपथ्य में रहीं. वास्तव में, बाइबल में उसका अंतिम उल्लेख प्रेरितों का काम १:१४ में है। उसने कभी भी उस तरह की श्रेष्ठता की तलाश या स्वीकार नहीं किया, इसलिए आज कई लोग उस पर ज़बरदस्ती करने की कोशिश करने के लिए कृतसंकल्प दिखते हैं। उसने फिर कभी अपने दोस्तों, रिश्तेदारों या किसी अन्य की ओर से चमत्कारों, विशेष अनुग्रहों या अन्य आशीर्वादों के लिए यीशु से मध्यस्थता करने का प्रयास नहीं किया। यह केवल निश्चित मूर्खता है जो किसी को यह कल्पना

Bq – यीशु ने पानी को शराब/द्रस्क्षा रस में बदल ददया
युहोन्ना २:१-११ | 6

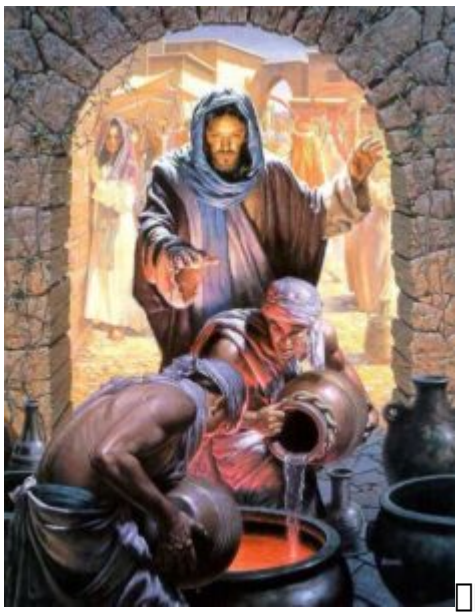
करने के लिए प्रेरित करती है कि अब उससे प्रार्थना की जानी चाहिए और उसकी पूजा की जानी चाहिए।

मरियम की प्रतिक्रिया से, यह स्पष्ट है कि वह उसकी प्रतिक्रिया से चाहे कितनी भी आश्चर्यचकित या भ्रमित क्यों न हो, फिर भी वह अधिक क्रोधित नहीं हुई। उसकी माँ ने सेवकों से कहा, “जो कुछ वह तुम से कहे वही करो” (यूहन्ना २:५)। जब मरियम यीशु के साथ अपने रिश्ते को सुलझाने की कोशिश कर रही थी तो यीशु की कही और की गई बातों से वह लगातार असंतुलित हो रही थी। उसने येशुआ की मां और मसीहा के अनुयायी के रूप में अपनी पहचान को स्वीकार करने के लिए संघर्ष किया। उनका बेटा उनकी अपेक्षा से कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण साबित हुआ।

पास में छह पत्थर के पानी के घड़े खड़े थे, जिस प्रकार यहूदियों द्वारा औपचारिक धुलाई के लिए इस्तेमाल किया जाता था, प्रत्येक में बीस से तीस गैलन या ७५ से ११५ लीटर पानी होता था (यूहन्ना २:६)। पानी की आवश्यकता दो उद्देश्यों के लिए थी। सबसे पहले, घर में प्रवेश करते समय पैरों को साफ करना आवश्यक था। सड़कें नहीं बनीं. सैंडल केवल पट्टियों द्वारा पैर से जुड़ा एकमात्र एकमात्र मात्र था। सूखे दिन में पैर धूल से सने होते थे और गीले दिन में पैर कीचड़ से सने होते थे। उन्हें साफ करने के लिए पानी का उपयोग किया जाता था।

दूसरा, हाथ धोने के लिए यह जरूरी था। मौखिक कानून (Ei देखे – मौखिक कानून) ने मांग की कि इसे न केवल भोजन की शुरुआत में, बल्कि भोजन के बीच में भी किया जाना चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया गया तो हाथ तकनीकी रूप से अशुद्ध थे। सबसे पहले हाथ को सीधा रखा गया और उस पर पानी इस तरह डाला गया कि वह कोहनी तक चला जाए (हाथ को उंगलियों से कोहनी तक चलना माना जाता था); फिर हाथ को नीचे की ओर करके रखा गया और पानी इस तरह डाला गया कि वह उंगलियों तक चला जाए। खाने वाले प्रत्येक व्यक्ति ने प्रत्येक हाथ से ऐसा किया, और फिर प्रत्येक हथेली को दूसरे हाथ की मुट्ठी से रगड़कर साफ किया गया। इन्हीं कारणों से पानी के ये विशाल पत्थर के घड़े वहां खड़े थे।

Bq – यीशु ने पानी को शराब/द्रस्क्षा रस में बदल ददया
युहोन्ना २:१-११ | 7



यीशु ने सेवकों से कहा, घड़े पानी से भर दो; इसलिये
उन्होंने उन्हें पूरा भर दिया। उनमें कुछ भी नहीं जोड़ा जा सका; चमत्कार के समय जार में पानी के अलावा कुछ भी नहीं था। तब उस ने उन से कहा, अब कुछ निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ (यूहन्ना २:७-८a)। इतिहास में इस समय तक, पानी को शराब में बदलना एक हाथ की सफ़ाई पार्लर चाल की तरह हो गया था। आज, हम कहेंगे कि यह टोपी से खरगोश निकालने जैसा होगा। बुतपरस्त मंदिरों में भ्रम फैलाने वालों ने छिपे हुए कक्षों वाले विशेष घड़ों का इस्तेमाल किया ताकि यह आभास हो सके कि वे इच्छानुसार पानी या शराब डाल रहे थे। ऐसा लगता है कि येशुआ ने परिवार की समस्या को वास्तव में वह करने के लिए चुनने में अपनी हास्य की भावना का खुलासा किया जो अन्य लोग केवल अनुकरण कर सकते थे। केवल उन्होंने चालाकी या संदेह के लिए कोई जगह नहीं छोड़ी। जब वह पीछे खड़ा था – शायद दूसरे कमरे में एक मेज पर भी लेटा हुआ था – नौकरों ने घड़े संभाला, पानी लाया, और नमूना लिया। फिर, घड़े के बीच में कहीं भोज के मालिक, चमत्कार हुआ।

तो काना में एक गाँव की लड़की की शादी में येशुआ ने पहली बार अपनी महिमा दिखाई; और यहीं पर टैल्मिडिम ने उसकी एक अद्भुत झलक देखी कि वह वास्तव में कौन था। सेवकों ने वैसा ही किया, और भोज के स्वामी ने वह पानी चखा जो दाखमधु में बदल गया था। यह युहोन्ना की पुस्तक में यीशु के सात चमत्कारों में से पहला है (योचनान २:१-११, ४:४३-५४; ५:१-१५; ६:१-१५; ६:१६-२४; ९:१-३४; ११:१-४४). उसे एहसास नहीं हुआ कि यह कहाँ से आया था, हालाँकि जिन नौकरों ने पानी निकाला था वे जानते थे (यूहन्ना २:८a-९a)। इस प्रकार, यह चमत्कार कोई सार्वजनिक नहीं था जिसे शादी में सभी ने देखा। इसके विपरीत, केवल मरियम, उसके प्रेरित और कुछ सेवक ही इसके गवाह थे। यहां पहले चमत्कार का उद्देश्य, और उनका आखिरी चमत्कार जब उन्होंने लाजर को मृतकों में से जीवित किया, यह था कि उनके प्रेरित उस पर विश्वास करेंगे।

Bq – यीशु ने पानी को शराब/द्रस्क्षा रस में बदल ददया
युहोन्ना २:१-११ | 8

फिर, युहोन्ना २:९b-१० में, भोज के मालिक ने दूल्हे (जिसके माता-पिता दावत के लिए जिम्मेदार थे) को एक तरफ बुलाया और सामान्य रिवाज से उसके प्रस्थान पर टिप्पणी की: हर कोई पहले पसंद की शराब लाता है और फिर सस्ती शराब लाता है मेहमानों के बहुत अधिक शराब पीने के बाद; लेकिन आपने अब तक सबसे अच्छा बचा लिया है (देखें Kk
– मुक्ति का तीसरा कप, यह देखने के लिए कि यह किस प्रकार की वाइन थी)।

जो कुछ हुआ उसकी प्रकृति और टैल्मिडिम पर इसके प्रभाव की याद दिलाते हुए युहोन्ना ने कथा का अंत किया। यीशु ने यहां गलील के काना में जो किया वह उन संकेतों में से पहला था जिसके माध्यम से उसने अपनी महिमा प्रकट की (योचनान २:११)। इस चमत्कार के दो परिणाम हुए. सबसे पहले, यीशु ने सृजन करने की अपनी शक्ति प्रकट की। दूसरे, यह पहला चमत्कार इसलिए था ताकि उसके टैल्मिडिम – उस समय उनमें से पांच – उस पर विश्वास करें। ईसा मसीह का अंतिम चमत्कार भी कुछ-कुछ वैसा ही होगा। लाजर के पुनरुत्थान में (यूहन्ना ११:१-४४), केवल कुछ ही लोग इसके गवाह होंगे, और यह इसलिए भी था ताकि उसके प्रति उसके प्रेरित के विश्वास की पुष्टि हो सके।